B. A. 3rd year
मार्क्सवाद

मार्क्सवादी विचारधारा के जन्मदाता कार्ल मार्क्स 1818-1883. तथा फ्रेडरिक एन्जिल्स 1820-1895 . है। इन दोनों विचारको ने इतिहास समाजशास्त्र विज्ञान अर्थशास्त्र व राजनीति विज्ञान की समस्याओ पर संयुक्त रूप से विचार करके जिस निश्चित विचारधारा को विश्व के सम्मुख रखा उसे मार्क्सवाद का नाम दिया गया।

मार्क्सवाद का अर्थ

मार्क्सवाद क्रांतिकारी समाजवाद का ही एक रूप है। यह आर्थिक और सामाजिक समानता में विश्वास रखता है अत: मार्क्सवाद सभी व्यक्तियो की समानता का दर्शन है। मार्क्सवाद की उत्पत्ति खुली प्रतियोगिता स्वतंत्र व्यापार औरै पूंजीवाद के विरोध के कारण हुइर्। मार्क्सवाद पूंजीवाद व्यवस्था को आमलू रूप से परिवर्तित करने और सर्वहारा वर्ग की समाजवादी व्यवस्था को स्थापित करने के लिये हिंसात्मक क्रांति को एक अनिवार्यता बातलाता है इस क्रांति के पश्चात ही आदर्श व्यवस्था की स्थापना होगी वह वर्गविहीन संघर्ष विहीन और शोषण विहीन राज्य की होगी।

मार्क्सवाद की विशेषताएं

मार्क्सवाद पूंजीवाद के विरूद्ध एक प्रतिक्रिया है।

मार्क्सवाद पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने के लिये हिंसात्मक साधनो का प्रयागे करता है।

मार्क्सवाद प्रजातांत्रीय संस्था को पूंजीपतियो की संस्था मानते है जो उनके हित के लिये और श्रमिको के शोषण के लिए बना गयी है।

मार्क्सवाद धर्म विरोधी भी है तथा धर्म को मानव जाति के लिये अफीम कहा है। जिसके नशे में लागे उंघते रहते हे।

मार्क्सवाद अन्तराष्ट्रीय साम्यवाद मे विश्वास करते हे।

समाज या राज्य में शाषको और शोषितों में पूंजीपतियों और श्रमिकोद्ध में वर्ग संघर्ष अनिवार्य है।

मार्क्सवाद अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत द्वारा पूंजीवाद के जन्म को स्पष्ट करता हे।

मार्क्सवाद के सिद्धांत

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद मार्क्स के विचारो का मूल आधार है मार्क्स ने द्वन्द्वात्मक प्रणाली को हीगल से ग्रहण किया है मार्क्स के द्वन्द्ववाद को समझने के लिए हीगल के विचारो को जानना आवश्यक है। हीगल के विचारो में सम्पूर्ण संसार गतिशील है और इसमें निरंतर परिवतर्न होता रहता हे। हीगल के विचारो में इतिहास घटनाओ का क्रम मात्र नही है बल्कि विकास की तीन अवस्थाआे का विवेचन किया है - 1. वाद 2 प्रतिवाद 3 संवाद। हीगल की मान्यता कि को भी विचार अपनी मूल अवस्था में वाद होता है। कुछ समय बीतने पर उस विचार का विरोध उत्पन्न होता है इस संघर्ष के परिणमस्वरूप मौलिक विचार वाद परिवर्तित होकर प्रतिवाद का विराधा होने से एक नये विचार की उत्पत्ति होती है जो सवाद कह लाती है।

हीगल का कहना है कि द्वन्द्व के माध्यम से संवाद आगे चलकर वाद का रूप ले लेता है जिनका पनु : प्रतिवाद होता है औरै द्वन्द्व के बाद संवाद का रूप धारण करता है। इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है अन्त मे सत्य की प्राप्ति होती है।

मार्क्स ने हीगल के द्वन्द्ववाद को स्वीकार किया किन्तु हीगल के विचारो को उसने अस्वीकार किया। जहां हीगल संसार को नियामक तथा विश्व आत्माा मानता है। वहां माक्सर् भौतिक तत्व को स्वीकार करता हे। मार्क्स का मानना है कि द्वन्द्ववाद का आधार विश्व आत्मा न होकर पदार्थ ही है। यह भौतिक पदार्थ ही संसार का आधार है पदार्थ विकासमान है और उसकी गति निरंतर विकास की ओर है विकास द्वन्द्वात्मक रीति से होता है। वाद प्रतिवाद और संवाद के आधार पर ही विकास गतिमान रहता है मार्क्स के विचारो मे पूंजीवाद वाद है जहां दो वर्ग पूंजीपतियों व श्रमिक है एक धनवान और दूसरा निर्धन है इन दोनो के हितो मे विरोध है। इन विरोधी वर्गो मे संघर्ष होना आवश्यक है इस संघर्ष में श्रमिको की विजय होगी और सर्वहारा वर्ग अर्थात श्रमिक वर्ग का अधिनायक वाद स्थापित होगा यह प्रतिवाद की अवस्था है। इन दोनो अवस्थाओ मे से एक तीसरी व न स्थिति उत्पन्न होगी जो साम्यवादी समाज की है। इस स्थिति मे न वर्ग रहेंगे न वर्ग संघर्ष होगा और न राज्य आवश्यक्तानुसार समाज से प्राप्त करेगा। यह तीसरी स्थिति संवाद की स्थिति होगी।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की आलोचना

मार्क्स द्वारा प्रतिपादित दर्शन का आधार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है किन्तु इसने इतने महत्वपूर्ण सिद्धांत का कहीं भी विस्तृत रूप से वर्णन नही किया।

मार्क्स ने हीगल के आध्यात्मवाद के स्थान पर भौतिकवाद का समर्थन किया है।

मार्क्स का मानना है कि समाज की प्रगति के लिए संघर्ष व क्रांति का होना अनिवार्य है। किन्तु यह सत्य है कि शांतिकाल में ही समाज की प्रगति तीव्र गति से होती है।

इतिहास की आर्थिक भौतिकवादी व्याख्या

मार्क्स की विचारधारा में द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की भांति इतिहास की आर्थिक व्याख्या का सिद्धांत भी महत्वपूर्ण है। मार्क्स के विचार में इतिहास की सभी घटनाएं आर्थिक अवस्था में होने वाले परिवर्तनो का परिणाम मात्र है। मार्क्स का मत है कि प्रत्येक देश मे और प्रत्येक काल मे सभी राजनीतिक सामाजिक संस्थाएं कला रीति रिवाज तथा समस्त जीवन भौतिक अवस्थाओ व आर्थिक तत्वो से प्रभावित होती है। मार्क्स अपनी आर्थिक व्याख्या के आधार पर मानवीय इतिहास की छ: अवस्थाएं बतलायी है जो है।

आदिम साम्यवादी अवस्था-सामाजिक विकास की इस पहली अवस्था में जीविकोपार्जन के तरीके बहुत सरल थे शिकार करना मछली मारना जंगलो से कंद मूल एकत्रित करना ही इनका मुख्य व्यवसाय था। भोजन प्राप्त करने व जंगली जानवरो से अपनी रक्षा करने के लिये ही मनुष्य समूह में झुण्ड बनाकर साथ साथ रहते थे। इस अवस्था में उत्पादन के साधन समस्त समाज की सामूहिक सम्पत्ति हुआ करते थे इस अवस्था में निजी सम्पत्ति नही थी और न ही को शोषक था और न ही को शोषित सब मनुष्य समान थे। इसलिए मार्क्स ने इस अवस्था को 'साम्यवादी अवस्था' कहा है।

दासता की अवस्था - धीरे धीरे भौतिक परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ। व्यक्तियों ने खेती करना पशुपालन करना और दस्तकारी करना प्रारंभ कर दिये। इससे समाज में निजी सम्पत्ति के विचारो का उदय हुआ। जिन्होने उत्पादन के साधनो; भूमिद्ध आदि पर अधिकार कर लिया। वे 'स्वामी' कहलाये ये दूसरे व्यक्तियों से बलपूर्वक काम करवाने लगे वे 'दास' कहलाये समाज 'स्वामी' और दास दो वर्गो में विभजित हो गया आदिम समाज की समानता और स्वतंत्रता समाप्त हो ग। इसी अवस्था से समाज के शोषक और शोषित दाे वर्गो के मध्य अपने आथिर्क हिताे के लिये सघ्र्ष प्रारंभ हो गया।

सामंतवादी अवस्था - जब उत्पादन के साधनो में और अधिक उन्नति हुयी पत्थर के औजार और धनुष बाण से निकलकर लोहे के हल करघे का चलन शुरू हुआ कृषि दस्तकारी बागवानी कपड़ा बनाने के उद्योगो का विकास हुआ। अब दास के स्थान पर उद्योगो में काम करने वाले श्रमिक थे। सम्पूर्ण भूमि छोटे मोटे उद्योगो दस्तकारियाेंं और उत्पादन के अन्य साधनो पर तथा कृषि पर जिनका आधिपत्य था उन्हे 'जागीरदार व सामन्त' कहा जाता था। कृषि कार्य करने वाले कृषकों और दस्तकारी करने वाले श्रमिको का वर्ग सांमतो के अधीन था। इस व्यवस्था को सामंतवादी अवस्था कहा जाता है। मार्क्स के अनुसार इस अवस्था मे भी सामन्तो तथा कृषको दस्तकारो के आर्थिक हितों में परस्पर संघर्ष चलता रहा।

पूंजीवादी अवस्था - अठारहवीं शताब्दी के उत्तराध्द में औद्योगिक क्रांति हु जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन के साधनो पर पूंजीपतियों का नियंत्रण स्थापित हो गया अर्थात पूंजीपति उत्पादन के साधनो के स्वामी हो गये लेकिन वस्तुओ के उत्पादन का कार्य श्रमिकों द्वारा किया जाता है वस्तुओं का उत्पादन बहुत बडे पैमाने पर हो ता है अत: श्रमिक स्वतंत्र होकर कार्य करते है किन्तु श्रमिको के पास उतपादन के साधन नहीं होते अत: वे अपनी आर्थिक आवश्यकता पूर्ण करने लिये श्रम बचे ने को बाध्य होते है। निजी लाभ के लिये पूंजीपति वर्ग ने श्रमिकों को शोषण किया दसू री तरफ श्रमिकों में भी अपने हितों के रक्षा के लिये जागरूकता आ। परिणामस्वरूप दो वर्गो पूंजीपति शोषक वर्ग और सर्वहारा; श्रमिकद्ध शोषित वर्ग के बीच सघंर्ष प्रारंभ हो जाता है। मार्क्स का मत है कि संघर्ष अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच कर पूंजीवाद को समाप्त कर देगा।

श्रमिक वर्ग के अधिनायकत्व की अवस्था - मार्क्स का विचार है कि पूंजीवादी अवस्था द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के माध्यम से श्रमिको व पूंजीपतियो के मध्य संघर्ष में जब पूंजीपतियो की पराजय होगी तब पूंजीवाद समाप्त होकर ऐतिहासिक विकास की पांचवी अवस्था ''श्रमिक वर्ग के अधिनायकत्व की अवस्था' ' आयेगी। इस अवस्था में उत्पादन के सम्पूर्ण साधनों पर श्रमिको का अधिकार हो जायेगा जिसे 'श्रमिक वर्ग का अधिनायक तंत्र या तानाशाही' कहा गया है इस पांचवी अवस्था के बहुमत वर्ग (श्रमिक वर्ग अल्पमत वर्ग पूंजीपति वर्ग) के विरूध्द अपनी राज्य शक्ति का प्रयोग कर उसे पूर्णतया समाप्त कर देगा।

राज्यविहीन और वर्गविहीन समाज की अवस्था - मानवीय इतिहास की अन्तिम अवस्था राज्य विहीन और वर्ग विहीन समाज की अवस्था आयेगी इस अवस्था में समाज में कवे ल एक ही वर्ग होगा जिसे श्रमिक वर्ग कहा गया है। इस समाज में न शोषक वर्ग होंगे न शोषित वर्ग होंगे। यह समाज राज्यविहीन आरै वर्ग विहीन होगा अत: वर्ग विहीन समाज में राज्य स्वत: ही समाप्त हो जायेगा तथा इस समाज में वितरण का सिद्धांत लागू होगा जिसमें समाज के प्रत्येक लागे अपनी यागेयता के अनुसार कार्य करें ओर उसे आवश्यक्तानुसार पा्रप्ति हो।

इस अवस्था साम्यवादी युग में वर्ग विहीन समाज की स्थापना से वर्ग संघर्ष प्रकृित से होगा। मनुष्य प्रकृति से संघर्ष कर मानव कल्याण हेतु नवीन खोज आविष्कार करेगें तथा साम्यवादी समाज आगे विकास करता रहेगा।

इतिहास की आर्थिक व्याख्या की आलोचना

आर्थिक तत्वों पर अत्यधिक और अनावश्यक बल - आलोचको के अनुसार मार्क्सवाद ने समाज के राजनीतिक सामाजिक और वैधानिक ढांचे में आर्थिक तत्वों को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया है तथा मार्क्स का यह दृष्टिकोण भी त्रुटिपूर्ण है कि सभी मानवीय कार्यो का आधार यही आर्थिक तत्व है सामाजिक अवस्था एवं समस्त मानवीय क्रियायें केवल आर्थिक तत्व पर ही आधारित नहीं होती है आर्थिक तत्व के अतिरिक्त अन्य तत्वों के द्वारा भी कार्य किया जाता है इन दूसरे तत्वो में सामाजिक वातावरण मानवीय विचारो और भौगोलिक तत्वों को लिया जा सकता है।

इतिहास का काल निर्धारण त्रुटिपूर्ण - मार्क्स ने मानवीय इतिहास की जो छ: अवस्थाएं बतलायी है वह त्रुटिपूर्ण है उसने इतिहास की गलत व्याख्या की है। मानववाद मार्क्स के आदिम साम्यवाद से सहमत नहीं है।

धर्म का निम्न स्थान - मार्क्स ने इतिहास की व्याख्या में धर्म को निम्न स्थान प्रदान करते हुए उसे अफीम की संज्ञा दिए है मानव केवल अथर् की ही आवश्यकता महसूस नही करता मानव को मानसिक शांति भी चाहिए। ।

डॉ0 मनीषा भूषण
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–समाजशास्त्र